आत्म-कथा (मथुरा प्रसाद वानप्रस्थी)

ओ३म्

आत्म कथा

लेखक तथा प्रकाशक

मथुराप्रसाद वानप्रस्थी

संरक्षक—गुरुकुल महाविद्यालय टटेसर

प्रथमवार ५०० | संवत् २०१२ वि० दयानन्दाब्द १३१ | मूल्य सत्य-सेवा

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, देहली।

"वानप्रस्थिसंस्तवः"

विधिगतिरिह लोके श्रूयते कर्मरूपा,
सुखमपि भवचारु प्राप्य दुःखानि चापि ।
इति प्रबलविपाके कर्मबन्धानुरूपम्,
मम सुहितविचारो राजते वानप्रस्थी ॥१॥

प्रथमवयसि प्राप्ते मातृक्रोडं विहाय,
सममपि सुसहायं पितृदेवाधिगम्यम् ।
विविधकटुककषायैः कष्टदायीनि लब्ध्वा,
प्रसहन-परिपक्वो राजते वानप्रस्थी ॥२॥

विगतशिशुप्रभावे यौवने प्राप्तकाले,
वितनु तिमिरजालं प्राप्य पाषण्डिनां वै ।
कथमपि विधिगत्या ज्योतिरासाद्य दैवम्,
ऋषिवर प्रभुदत्तं सत्यसन्दर्शनीयम् ॥३॥

कष्टे काले सुविनययुते साग्रहे युद्धक्षेत्रे,
गान्धीनेतुर्नयमनुसृतौ स्वस्य प्राणानहौषीः ।
तस्मात्सिद्धप्रथितमहिमा मातृभूमिश्चकास्ति,
आशीर्वादं तव श्रुतिपुटे वानप्रस्थिन् वितत्य ॥४॥

निजनिखिलसुकृत्यैरर्जितैस्त्वां निरीक्ष्य,
गुरुकुलकुलभूमिश्चास्ति जाता कृतार्था ।
मुहुरिव निजभाग्यं प्रार्थयन्ती स्वकीयम्,
तव सरसमनोज्ञे दर्शने दत्तचित्ता ॥५॥

—ओजोमित्र शास्त्री

भूमिका

"न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः"

श्री मथुराप्रसाद जी वानप्रस्थ का जीवन प्रत्येक मनुष्य को यह शिक्षा देने में समर्थ है कि कोई भी मनुष्य कितनी ही आपत्तियों को पार कर अपने कर्त्तव्य मार्ग पर अटल होकर उद्देश्य पूर्त्ति में किस प्रकार सफल हो सकता है।

इनका जीवन, विश्वास, श्रद्धा एवं कर्मठता से प्रारम्भ होता है। शिक्षा के अभाव में व्याकुल हृदय, जिस किसी शिक्षा को अपना कर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है, उसी का प्रतीक इस चरित्र नायक के पौराणिक काल से लिया जा सकता है।

हठधर्मिता को छोड़ कर सन्मार्ग ग्रहण करने की उत्सुकता आर्यसमाज में दीक्षित होने के आरम्भ से लिया जा सकता है। और यह हमें पुनः उद्बोधित करता है कि अभी भी न जाने कितने रत्न स्वामी दयानन्द जी के ज्ञान प्रकाश के अभाव में कुपथ में भटक रहे होंगे। अतः स्वामी जी के प्रकाश का विस्तार जहां तक हो सके विस्तृत करते रहना, उनके उत्तराधिकारियों का परम कर्त्तव्य है।

छूआछूत की भावना से पृथक् होकर अपने सहयोगी का कितना सहयोग करना चाहिये, और उसकी आपत्ति में अपनी आपत्ति समझकर प्राणपण से रक्षा करनी चाहिये, इसका आदर्श आप भक्त टेकराम के साथ किये गये व्यवहारों से देख सकते हैं। जब कि उसे हरिजन समझ कर सभी घृणा कर रहे हों, उस समय उसको गोद में लेकर इधर-उधर उठा कर रखना कितना आदर्श दिखा रहा है।

रूढिवाद के उन्मूलन में आपका जो विचार कार्य्य कर रहा है, वह एक हरिजन की बारात में जाने से स्पष्ट हो जाता है। घर के स्वकीय जन मिट्टी के जूठे पात्रों में भोजन देते हैं किन्तु कर्मठ योगी उसको स्वामी दयानन्द की एक लघु सेवा समझ कर कुछ भी नहीं गिनता।

पाखण्ड एवं अत्याचार घूसखोरी के विरोध में जो आप निर्भय होकर कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हैं, वह भी आप के एक अदम्य उत्साह का परिचय देने वाला है। जब कि बहुत से प्राचीन कांग्रेसी अपने मार्ग से लोभवश विचलित होकर अनेकानेक अनुचित उठा रहे हैं। उस समय अपने भविष्य सुख-दुःखों का कुछ भी ध्यान न कर उनका विरोध करना एक महान् साहस का

कार्य्य है। यदि इस विरोध में न खड़े हों तो अनेकानेक प्रलोभन देने वाले इनको द्रव्य आदि की पर्याप्त सहायता दे सकते हैं, और इनका अग्रिम जीवन सुखमय व्यतीत होता रहे किन्तु विरोध में होने से ये सारी सुविधायें नष्ट हैं, किन्तु इसकी इन्हें कुछ भी चिन्ता नहीं। इसी के कारण इन्हें कोई यह भी नहीं कहना चाहता, कि "इन्होंने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में कार्य्य किया है।" किन्तु "न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः" के अनुसार स्वकर्त्तव्य पथसे विचलित होना आप जैसों का कार्य्य नहीं है। तदर्थ, विपथगामियों के विरोध में अभी भी अग्रसर हैं। चाहे आज के कांग्रेसी इनके सात बार जेल जाने का कोई मूल्य न रखें।

आर्य्यसमाज की सेवा में आपने जो भाग लिया उसका वर्णन आपका जीवन ही है। आपने गुरुकुल झज्जर, आर्य महाविद्यालय किरठल आदि में, संस्था की उन्नति के लिये एक समय का भोजन करके ग्रीष्म, वर्षा, शीत आदि में एक रस होकर अवर्णनीय कार्य किया है। आजकल गुरुकुल महाविद्यालय टटेसर में कुल पिता के समान उसका भरण-पोषण कर रहे हैं। और आपकी छत्रच्छाया में तीन विद्वान् संस्कृत एवं हिन्दी की उच्च शिक्षा द्वारा समाज कल्याण कर रहे

हैं। आपका वरद हस्त प्राप्त कर मैं भी आपकी शीतल छाया में आचार्य्य-पद पर कुल की कुछ सेवा करने में समर्थ हो रहा हूँ। आशा है आपकी जीवनी बहुतों को सन्मार्ग दर्शक सिद्ध होगी।

विद्यावारिधि ओजोमित्र शास्त्री साहित्यरत्न
व्याकरणाचार्य्य
आचार्य्य गुरुकुल महाविद्यालय टटेसर

ओ३म्

'श्री मथुराप्रसाद जी वानप्रस्थ की आत्मकथा'

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितु र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ओ३म् सर्वत्र व्यापक (भूः) प्राणाधार (भुवः) दुःखनाशक (स्वः) सुख स्वरूप (तत्) वह प्रसिद्ध (सवितुः) उत्पन्न करने वाले का (वरेण्यम्) सर्व श्रेष्ठ (भर्गः) शुद्ध स्वरूप पाप नाशक (देवस्य) दिव्य स्वरूप का (धीमहि) हम ध्यान करते हैं। (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे।

मेरा जन्म चैत्र पूर्णिमा सम्वत् १६४१ विक्रमी में जाट कुल में हुआ। मेरी माता का नाम नन्दकुमारी तथा पिता का नाम मोतीलाल था। मेरी चार वर्ष की अवस्था में ही माता तथा पिता स्वर्गवासी हो गये। जिसके कारण मेरा पालन-पोषण कष्टमय अवस्था में ही व्यतीत हुआ। इसी कारण अध्ययन आदि से भी वंचित रहा। बीस वर्षों तक किसी सत्संग के प्राप्त न होने पर जिस किसी भी पुस्तक पर विश्वास करके और पाखण्डियों के चक्कर में आता रहा।

१९६० वि० में पौराणिक पण्डितों के पास बैठता था, उनके उपदेश ने मुझ पर पाखण्ड का अड्डा जमा दिया। एक मास में आठ व्रत करने लगा। चार रविवार, दो एकादशी, एक पूर्णिमा, एक अमावस्या। सब व्रतों में निराहार रहने के कारण शरीर में निर्बल हो गया। रविवार के दिन बारह बजे एक घण्टा सूर्य की तरफ़ देखने से दृष्टि दोष भी हो गया। उस समय मेरी आयु २० वर्ष की थी। आर्य समाज का ग्रामों में प्रचार नहीं था। १९६५ वि० में साधुओं के चक्कर में पड़ गया। उस समय मैं एक सुवर्ण की कण्ठी बाँध रहा था, जो तीन तोले की थी। एक तोले की मुरकी थी, २० तोले की चाँदी की तगड़ी थी, ४०) रुपये थे, ऋषिकेश में एक साधु ने ले लिए, और शिष्य बनाकर लाहौर के समीप तकीपुर ग्राम में किसी साधु के पास भेज दिया और मैं वहां पर दश मास तक गुरुमुखी पढ़ता रहा। दैवयोग से लाहौर से एक उपदेशक वहां आ गया, उसने मुझ से कहा—क्या पढ़ता है। मैंने कहा—गुरुमुखी, उसने कहा--समय व्यर्थ व्यतीत करते हो। हिन्दी तथा देवनागरी पढ़कर ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पढ़, तब ज्ञान होगा। दुनिया के पाखण्डों का पता लगेगा। उसकी बात मानकर मैं वहां से चल

दिया । अमृतसर तरनतारन से होता हुआ व्यास के तट पर एक बावड़ी पर आया । उसमें ८४ पौड़ी संगमर-मर की खाट इतनी चौड़ी बनी हुई हैं । द्वार पर लिखा है—"कि जो ८४ बार स्नान कर और ८४ पाठ जपजी साहब के करे तो उसकी लख ८४ यौनियां कट जायें । मैं उस झमेले में पड़ गया । जप जी साहब के मन्त्र ३८ हैं । जिसका एक मन्त्र यह है—"असंख्य मूर्ख असंख्य असंख्य मूर्ख अन्धघोर असंख्य चोर हराम खोर असंख्य उम्र कर जायें जोर, असंख्य गल बढ़ हत्या कमायें असंख्य पापी पाप कर जायें, असंख्य मलेच्छ मल भक खायें असंख्य निन्दक शिर करें भार नानक नीच कहें विचार वारा न जावां वहां एक बार जो तुझ भावे सोई भली कार, तू सदा सलामत निरंकार ।" ये ८४ मन्त्र ८४ बार स्नान कर हर एक पौड़ी पर ३८ मन्त्र जप जी साहब के जपे गये, ये जप और स्नान सुबह ८ बजे से सायं ५ बजे तक पूरा किया । ऋषिकेश लक्ष्मरण भूले के ऊपर बदरीनारायण के जंगल में ३ दिन तक रामनाम का जप करता रहा । यह समझ कर कि "शरीरधारी राम मिलेगा ।" अर्ध रात्रि में शेर दहाड़ता हुआ आया । और पास से निकल गया । मैंने समझा शेर के रूप में भगवान् आया है । ३ दिन

तक निराहार रहा। तब एक साधु पहाड़ से उतरा हलवा-पूरी रख कर मौनवृत्ति से चला गया। मैं भूख से तंग हो रहा था। लगा खाने। जब भोजन कर लिया तब विचार आया कभी यही भगवान् हो, उठकर लगा खोजने। उसकी कुटी अथवा उसका पता कहीं पर न मिला। इसी तरह १५ दिन तक देहरादून के जंगल में विचरता रहा। केवल गूलर व बेलगिरी खाता रहा। दो तीन दिन तक मसूरी व द्रोणाचार्य की गुफा में रहा। वहां से चलकर महरौली आया। इस विचार से ऊपर चढ़ गया कि नीचे गिरते हुए को भगवान् पकड़ लेंगे। यह थी अविद्या, अज्ञान तथा मूर्खता। जब चढ़ने को तैयार हुआ तब भगवान् ने बुद्धि दी कि मूर्ख ! मनुष्य योनि उत्तम है। यों ही न गंवा। यह विचार कर नीचे उतरा। घर आया। एक पौराणिक पंडित से हिन्दी पढ़ा। थोड़ा-सा सारस्वत पढ़ा। उस समय देहली में आर्यसमाज का जलसा हो रहा था। श्री पूज्य स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द का चार साम्प्रदायकों से शास्त्रार्थ हो रहा था। पादरी, मुसलमान, जैनी, पुराणी। श्री स्वामी जी अकेले। वे चारों हार गये। सुनकर मेरे ज्ञान-चक्षु खुल गये। मैं वहां से सत्यार्थप्रकाश लाया, पढ़ा। मेरा जीवन ही पलट

गया। ये बात १९६७ सम्वत् वि० की हैं। उस समय मैं माजरा डबास में था और घर का कार मुखतार भी मैं ही था, क्योंकि मेरे माता-पिता का स्वर्गवास हुआ। उस समय मेरी आयु ४ वर्ष की थी। मेरे नाना-मामा ने पालन-पोषण किया था। जब मेरी आयु १८ वर्ष की हो गई। दैवयोग से नाना-मामा का सारा परिवार मर गया। केवल उनके दो बालक रह गये। कन्या की आयु सात वर्ष, पुत्र की आयु ५ वर्ष। मैं उनका कार-धन्धा करता रहा। और आर्यसमाज का प्रचार करता रहा और आर्यसमाज स्थापित किया। लड़की का विवाह ६ वर्ष की का हुआ था और सात वर्ष की विधवा हो गई। जब लड़की १६ वर्ष की हुई तब मैंने उसके ससुर से कहा—कि विवाह के योग्य हो गई। हमें लड़का दो। उसने उत्तर दिया—मैं दूसरी स्त्री का नियोग करके लाया हूँ। उसके पेट में गर्भ है। परमात्मा की कृपा हुई उस के पुत्र हो जाये तब हम उस लड़की को ले आवेंगे। मैंने कहा तेरी यह बात मानने के योग्य नहीं है। हम अपने आप योग्यवर तलाश करके पुनर्विवाह कर देंगे। यह सुनकर सब परिवार बिगड़ गया। कहने लगे कलियुग आ गया। परिवार के नम्बरदार ने मेरा साथ दिया। उसका

नाम रामानन्द है। हम दोनों ने योग्यवर देखकर कन्या का पुनर्विवाह कर दिया। परन्तु कष्ट बहुत सहने पड़े। लड़की घरबार की कर दी गई और मेरे मामा का पुत्र श्रीलाल युवा हो गया। उसने अपना घरबार सम्भाल लिया। तब सं० १९८० वि० में ६००) रुपये और दो बैल आजकल जिनका मूल्य २०००) रुपये है, गुरुकुल झज्झर में दान देकर मैंने भी स्वामी श्री पूज्य परमानन्द जी से वानप्रस्थ ले लिया। और गुरुकुल के सहायक या संरक्षक होकर "नंगे पैर नंगे सिर एक समय भोजन किया करूँगा जब तक गुरुकुल की स्थिति सुधर न जाये" यह प्रतिज्ञा की। मध्य में जब-जब कांग्रेस का आन्दोलन चला तब-तब उसमें शामिल होता रहा। राजनीति में भाग लेने का उपदेश मुझे सत्यार्थप्रकाश से मिला—कि विदेशी राज्य कितना ही अच्छा हो दूसरे के मुल्क के लिए लाभदायक नहीं होता। यह पढ़कर मैं कांग्रेस में शामिल हो गया। और जो कष्ट हुए, वे सब सहे। १९३० सन् में कांग्रेस का आन्दोलन चला। तब मैं रोहतक की जेल में गिरफ्तार होकर गया। जेल वालों से भोजन खराब होने के कारण कांग्रेसियों का झगड़ा हो गया। और राजनीतिकों ने अनशन कर दिया। जेल वाले जिस

बारिक में रहते थे उसमें ५० राजनीतिक थे। जेल अधिकारी शाम को दो रोटी के हिसाब से भोजन रखकर चले जाते थे और सुबह को उठा ले जाते थे। इस लिए उस भोजन पर मेरा पहरा रहता था कि कोई अपने मार्ग से डिग न जाये। तीसरे दिन एक नौजवान रात्रि को नौ बजे रोटियों के ऊपर टूट पड़ा। जब मैं हटाने लगा तो उसने मुख में दो रोटी उठा ली। और कहा कि मैं माफी नहीं मांगूँगा परन्तु रोटी खाये बगैर रहा नहीं जा सकता। जेल में ३०० सौ राज-नीतिक थे। उनमें से कोईन हीं डिगा, चौथे दिन फैसला हो गया। हर इतवार को जेल अधिकारी कुछ न कुछ काम देते थे। जिसमें जेल के डिप्टी साहब ने चार आदमियों को आटा पीसने की चक्की दी। जिनके नाम यह हैं—रोहट का कूड़ेराम, भराण का चौ० भरतू, टीकरी का चौ० सरजीत, और मथुरा प्रसाद। यह हुक्म सुनाकर चक्कियों में भेज दिए और नौ-नौ सेर गेंहूँ भेज दिये कि इनको पीसो। कुल २० चक्की थीं, थोड़ी देर के बाद पं० श्रीराम शर्मा हमारी कोठड़ी के सामने आया, और सम्बोधन करके कहा कि मथुरा-प्रसाद ! गेंहूँ न पीसना। जो तुमने गेंहूँ पीस दिये तो बारी-बारी सभी ने पीसना पड़ेगा। क्योंकि कांग्रेसियों ने आज तक पीसा नहीं। इखलाकियों को पीसना

पड़ता था। मैंने कहा कि जेल अधिकारी कोई कष्ट दें तो आप हमारा साथ देंगे ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि ३०० सौ राजनीतिक हैं ज़ेल में, हम सारे सहकारी होंगे। चारों को यही समझा दिया गया। और किसी ने गेहूँ न पीसे। शाम को चार बजे जेल अधिकारी गेहूँ को उठा ले गए और हमारी रिपोर्ट कर दी कि इन्होंने काम नहीं किया। सुपरिंटेण्डेण्ट के सामने हमारी पेशी हो गई शाम को। और सुपरिंटेण्डेंट ने हमको समझाया कि जो तुम जेल कानून को तोड़ोगे तो तुमको कपड़ों की जगह बोरी के सिले कपड़े और हथकडी बेड़ी व डण्डे भी लगेंगे। यह समझा कर हमको फिर कोठड़ी में बन्द कर दिया और समझाया कि रात को सोच समझ लेना, कल गेहूँ पीस देना नहीं तो बुरा नतीजा होगा। दूसरे दिन १८-१८ सेर गेहूँ भेज दिये चारों के पास। दिन के बारह बजे एक जमादार एक जेल का नम्बरदार दोनों आये। कोठड़ी का ताला खोल अन्दर मुझे समझाने लगे कि तुम थोड़ा पीस दो। मैंने कहा मैं पीसना नहीं जानता। उन्होंने कहा, आओ हम पीसना सिखायेंगे और मेरा हाथ पकड़ कर चक्की के पास ले ज़ाकर मेरा पहुंचा पकड़ कर गेहूँ गेर कर अपने हाथ से

पिसवाने लगे। पांच-चार चक्कर आये जहां उन्होंने छोड़ा, चक्की वहीं रुक गई। ताला मूंद कर निकल गये। जो पास में तीन थे उनको भी धोखा देकर कि मथुरा अब चक्की चला रहा था तुमने सुना होगा ऐसे कहकर उनके साथ भी वही कार्य किये। उन्होंने नहीं पीसा और ताला लगा कर चले गये। चार बजे गेहूँ को उठा ले गये। ५ बजे पेशी करवा दी। सुपरिटेंडेंट साहब ने समझाया कि भाई १-१ सेर गेहूँ पीस दो। हमारी भी बात रह जायेगी तुम्हारी भी, तो मैंने कहा कि हम पीसना नहीं जानते, हमारे घर स्त्रियां पीसा करती हैं। तो उसने हुकम दिया कि इनको हथकड़ी और डण्डा बेड़ी लगा दो। डण्डा बेड़ी इतने सख्त लगाये कि खाल उनके बीच में आगई, चल भी नहीं सकते थे। दो जेल अधिकारियों ने पकड़ कर कोठड़ी में बन्द कर दिए। यह सूचना सारी जेल में फैल गई। सब कांग्रेसियों ने "सुपरिंटेण्डेंट मुरदाबाद" के नारे लगाये। जेल अधिकारियों ने पुनः सबको बारिकों में बन्द कर दिया। १६ कोठड़ी शेष थीं उनमें मुख्य-मुख्य श्रीराम जैसों को बन्द कर दिया। और मार-पिटाई भी उनसे की जो कोठड़ियों में थे। मेरे को पीटने को तीन आदमी आये थे। भंगी व नम्बरदार ने मुक्के मारे

बे अन्दाज के और जेल अधिकारी ने २५-२५ डण्डे तलुओं में मारे। बेहोशी में बन्द करके सबको २० कोठड़ियों वालों को इसी तरह कम अधिक पीटा, बारिकों वालों पर जोर नहीं चला। यह कोलाहल शहर तक पहुँच गया। शहर वालों ने सुपरिंटेण्डेंट का जिनाजा निकाला और जेल के आगे आकर सुपरिंटेण्डेंट मुरदाबाद के नारे लगा कर वहीं फूंक दिया और अम्बाला डिविजन में तार दे दिया। वहां से चौ० बलदेवसिंह तहकीकात में आये जो उस समय जेल के अधिकारी थे। उन्होंने आकर हमसे सारी बातें पूछीं और लिख लीं। सुपरिंटेण्डेंट ने चौ० बलदेवसिंह व श्रीराम से माफी मांगी और कहा कि दावा न करो, हमारा फैसला करवा दो। चौ० बलदेवसिंह ने हमको समझाया कि सुपरिंटेंडेंट घबराया हुआ है अच्छा यही है कि समझौता कर लो, क्योंकि तुमको जेल में रहना है और उनको प्रबन्ध करना है। और जिस तरह तुम कहोगे मैं उसी प्रकार रिपोर्ट कर दूंगा, अगर समझौता नहीं करना चाहते हो तो। परन्तु सरकार सुनाई नहीं करेगी यह सयय संग्राम का है। सरकार अपने अफसरों की ही सुनाई करेगी। अतः उचित यही है कि समझौता कर लो। समझौता इन

शर्तों पर हो गया कि राजनीतिकों को कभी भी चक्की नहीं दी जायेगी। ५-४ दिन हस्पताल में रख कर हमारा मिण्टगुमरी तबादला कर दिया। वहां भी सुपरिंटेण्डेण्ट ने यही कानून बना रक्खा था कि जो तबादला देकर आये उसको सात दिन तक चक्कियों में रक्खा जाये जिससे वे झगड़ा न करे। जब हमारे टिकट पर यह लिखा था कि इन सभी ने कानून भंग किया डण्डे बेड़ी व हथकड़ी सही हैं। इस कारण से इनको कष्ट न देकर बारिकों में बन्द कर दिया। वहां पर हम १२ आर्यसमाजी थे। उस समय तक कांग्रेस छूतछात मानती थी। हम आर्यों ने उस छूआछूत को तोड़ा और हरिजनों से रोटी बंटवाई। एक पं० गिरधारीलाल था नरेला का हमारे जत्थे में। उसने हरिजनों के हाथ से रोटी नहीं ली। और हमने वहां अपनी पूरी सजा काट ली। फिर वहां से छूटकर हम रोहतक आ गये। वहां पर शराब की दुकान पर धरना दिया। एक शराबी ने मोटर में शराब रख कर मोटर चला दी। एक पहिये के आगे मैं और दूसरे के आगे कुरड़ा लेट गया। एक-एक पैर पर पहिया चढ़ गया और हल्ला-गुल्ला मच गया जिससे मोटर हटाली। पैरों धें चोट आई जो कई दिनों में

ठीक हुई। कांग्रेसियों की सरकार का आज शराब बिना काम ही नहीं चलता। उस समय वायसराय इर्विन था। उससे महात्मा गान्धी का समझौता हो गया। आन्दोलन समाप्त कर दिया और लन्दन में एक गोल-मेज हुई कि भारत को कुछ देना चाहिए। वहां पर महात्मा गान्धी की बात मानी नहीं गई। वहाँ पर जिन्ना जैसे पहुँच गये। समझौता भंग हो गया। कुछ दिन के बाद महात्मा गान्धी को गिरफ्तार कर लिया। फिर १९३२ का आन्दोलन चला। उस समय मैं माजरा आ गया। माजरा में कांग्रेस ने परस के ऊपर झण्डा लगा रक्खा था। उस समय वायसराय इर्विन के स्थान पर वायसराय विलंग्डन कांग्रेस को नष्ट करने का बीड़ा चबा कर लन्दन से आया था। वायसरायने सख्ती से कहा—कांग्रेस को नष्ट करदो। और झण्डे उतार दो और जो कोई कांग्रेसी हो उसको पकड़ो। नरेले का थानेदार मुसलमान नयाज मुहमद था। अपने हल्के के कांग्रेसी दबाने शुरू करे। माजरे की चौपाड़ में भी इसी उद्देश्य से आया। सारा गांव इकट्ठा किया। कहने लगा कि बताओ यह झण्डा किसने लगाया है। उसको हम गिरफ्तार करेंगे। सारा गांव भयभीत था। सारे नट गये कि हम ने तो नहीं

लगाया, न हम कांग्रेसी ही हैं। मैं यह समझ कर खड़ा हो गया कि यह तो महात्मा गांधी को धोखा देना है। और मैंने कहा कि मैंने झण्डा लगाया, अभिवादन किया। मैं गिरफ्तार कर लिया गया। अपने पास बैठाकर समझाने लगा कि गांव में ४०, ५०, कांग्रेसी थे, परन्तु सच्चे कांग्रेसी तुम ही निकले, थानेदार ने कहा कि मैं तुमको गिरफ्तार करके ले जाऊँगा तो यहाँ कोई कांग्रेस का नाम भी न लेगा। मैंने कहा कि मुझे तो गिरफ्तार ही कर लो यह महात्मा गांधी का हुक्म है। कांग्रेस का आन्दोलन है और कहीं जाकर होऊँगा तो ज्यादा कष्ट सहने पड़ेंगे, अतः आप ही गिरफ्तार कर लो, यहीं पर सहूलियत है। वह मुझे छोड़ गया और झण्डे को ले गया। अगले दिन मैं देहली गया। और चान्दनी चौक में बजाजों की दुकानों पर विदेशी कपड़े का बहिष्कार करने लगा। नगरपालिका के हत्थे में पुलिस रहती थी। उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया। मोटर में बैठाकर कोतवाली में ले गये। कोत-वाली में बड़े कष्ट दिये, अगले रोज जल में पहुँचा दिया। वहां मेरी छः महीने की सजा हुई और ५०) रुपये दण्ड। जुर्माना मेरे गांव रोहद से वसूल कर लिया। जेल में मेरी रोटी बांटने की ड्यूटी थी, ८००

आदमियों को बाँटता था। मैंने यह समझ करके यहाँ छूआछूत का भूत मिटाने का अच्छा मौका है, एक चमार का लड़का सहायक बना लिया। मैं साथ-साथ था वह रोटी बाँटता था। मेरे कैम्प के पास ५, ४, पोप पौराणिक रहते थे जो हम को जानते थे। एक स्वामी मोहननाथ, भोर का उमरावसिंह वकील का मुन्शी नरेले का, एक जेलदार श्री गोपाल नरेले का और लाला रामस्वरूप चुलकाने का, ये चारों रोटी लेने से इन्कार कर गये। उनको देखकर १०० आदमी ओर इन्कार कर गये। फिर मैंने रोटी बाँटी। छः महीने की जेल पूरी करके छूट गया और गुरुकुल झज्झर में आ गया। सन् ३८ में महात्मा गाँधी अकेले जेल में थे। और सरकार ने एक चाल चली कि हरिजनों को हिन्दुओं से अलग किया जाए। महात्मा गांधी ने मरण अनशन कर दिया। देश में खलबली मची और जलसे कर-कर के हरिजनों से हलवा बटवाना शुरू किया। मैं और चौ० बिहारीसिंह लाडपुर, चौ० गोरधन लाड-पुर, और स्वामी छोटूनाथ कुतुबगढ़ ये छुआछूत को को तोड़ने के लिये टेका हरिजन के भानजे के भात में गये। सावरपुर में गये थे। जब वहाँ गए तो कुछ जाट वहाँ परिचित थे। उन्होंने जब पता चला कि ये

जाट हैं तो हम को जेली लेकर मारने आये। कोलाहल देखकर बहुत आदमी इकट्ठे हो गए और बात कुछ शान्त हुई। और कहा कि अब तो दिन है रात को इनकी खबर लेंगे। वहां से अगले दिन बरात गड़वासिनी जानी थी। हम यह सोचकर कि रात को गड़बड़ न हो जाये अतः पहले ही बड़वासिनी चले गए। वहाँ जिसके बारात जानी थी उसके घर पहुँच गए। और उससे कहा कि हम आर्यसमाजी हैं और वहाँ से जो बरात आयेगी उसमें शामिल होंगे। हम दंगे के भय से आज आए हैं अतः हमको आज विश्राम करने का सामान दो। तो चमार गाँव वालों के भय से इन्कार कर गया और कहा कि हमारा पण्डित है हम तो उसी से विवाह करवायेंगे। बड़वासिनी में लाडपुर का एक रिश्ता था, बिहारी वहीं पर ले गया। वहाँ के ज़मींदार ने सब प्रबन्ध कर दिया। दूसरे दिन चमारों की बारात आ गई। और चौपाड़ में चमारों की बरात ठहराई और हम प्रचार करने लगे। जब वहाँ के जमींदारों को यह पता लगा कि यह चमारों की बारात में आ रहे हैं तो हमारे लिये दिये बिस्तरों को उठा ले गये। और चमारों ने खाट और भोजन नहीं दिया। तब सामान मोल लाकर भोजन बनाया और भूमि पर

सोये। अगले दिन उठकर हम अपने घर आ गये, तो घर वालों को पता चला कि ये चमारों की बारात में गए थे। घर वालों ने भोजन बर्तनों में नहीं दिया। जब तक यह बात पुरानी नहीं हुई तब तक यह कष्ट सहने पड़े। देश में यह सहभोज होने लगे। और महात्मा गांधी के पास पत्र व आदमी भी जाने लगे और विश्वास दिलाया कि छूआछूत अब नहीं रहेगी। सरकार कुछ घबराई और महात्मा को रिहा कर दिया और सरकार ने १० वर्ष का समय दिया कि हरिजनों को या तो मिला लो नहीं फिर अलग कर देंगे। फिर मैं गुरुकुल झज्झर में चला गया, वहाँ पर एक चमार हीरा गोछी का छूआछूत को तोड़ने के लिए रक्खा। एक शेरा भंगी रक्खा, और दोनों को कुएँ पर लगा दिया। सिलानी गांव वाले बहुत बिगड़े परन्तु धीरे-धीरे शान्त हो गए। सं० १९८१ में मथुरा में शताब्दी हुई थी महर्षि दयानन्द की। उसमें मैं सब विद्यार्थियों को लेकर गया। वहाँ पर पं० ब्रह्मानन्द जो पंजाब प्रतिनिधि सभा को उपदेशक मंडल का प्रधान था। उसकी सहायता से मटिण्डू भैंसवाल और झज्झर गुरुकुल ये तीनों खुले थे। उनके कुलपति थे, यह भी वहाँ गये थे। इसने संन्यास लेने का विचार किया। मेला में ५ लाख

आर्यसमाजी थे, वहाँ सरकार का कोई काम नहीं था। उसमें एक बड़ा यज्ञ रचा गया। और उसमें पं० जी संन्यास लेने के लिए बैठे। स्व० स्वावी श्रद्धानन्दजी ने संन्यास दिया। जिस समय आहुति देने लगे, ब्रह्मानन्द जी की आंखों में पानी आ गया। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी ने बहुत सारे विद्वानों की उपस्थिति में बहुत फटकारा। और कहा कि बन्धन से छुड़ाये जाते हो, और रोते हो, यह तुम्हारी बुद्धि का दोष है। जैसे सुआ पिंजरे से निकाला जाता है तो खुश ही होता है। परन्तु फिर वह उसमें आता है तो उसका ही दोष है। स्वामी ब्रह्मानन्द अंग्रेजी के विद्वान् थे। अतः मोह में आ गये थे। और फिर नाम भी वही रक्खा। वही वेशभूषा। एक गुण विशेष था उसमें—अतिथि स्वागत और मधुरवाणी। दूसरा उदाहरण संस्कृत वालों का लो। १९२६ सन् में कांगड़ी गुरुकुल की जयन्ती थी। उसमें म० गांधी भी आये थे। और वहाँ के ब्रह्मचारियों का महात्मा जी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। और उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ही संसार को दल-दल से निकाल सकता है। पं० युधिष्ठिर वहां के स्नातक थे। और गुरुकुल भैंसवाल के अधिष्ठाता थे। उन्होंने भी संन्यास ग्रहण किया था स्व० स्वामी

श्रद्धानन्द जी से। और आहुति देते प्रतिज्ञा की कि मैं आदित्य ब्रह्मचारी रहूंगा। उनका नाम रक्खा गया स्वामी व्रतानन्द जी। और बड़े प्रसन्नचित दिखाई देते थे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी की तरह कोई उदासी नहीं थी। आज तक त्याग तपस्या में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह है संस्कृय का प्रभाव। इसके बाद १९३८ में हैदराबाद में सत्याग्रह आर्यसमाज का प्रारम्भ हुआ। जो वहां नबाब धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लगा रहा था। २० हजार आर्यसमाजी वहां की जेल में पहुँचे। माजरे से मथुरा व टेका हरिजन दोनों शामिल हुए। माजरे में एक जलसा किया और लोगों पर प्रभाव पड़ा, दो मनुष्य और तैयार हुए—एक मानसिंह, एक धारासिह पहलवान। जत्था भगवान्-देव की अध्यक्षता में चला और देहली करौग बाग में ठहरा। वहाँ पर हमारा अच्छा स्वागत हुआ। धारा पहलवान तो देहली से लड्डू खाकर भाग आया। हम तीन माजरे से रह गये। शोलापुर में कैम्प था आर्यसमाजियों का। एक रात वहां ठहर कर दूसरे दिन बारसी में एक बड़ा मन्दिर था वहाँ भेज दिये। वहाँ भी स्वागत किया गया। वहाँ पर ९५ आदमियों का जत्था बनाया गया। सबके हाथों में शिर से ऊँची

लाठी जिसमें ओ३म् का झण्डा था दे दी गईं और चार मोटरों में भरकर तुलजापुर की चौकी पर भेज दिये। हम से पहले दिन ४२ आदमियों का जत्था पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती की अध्यक्षता में उसी घाटी में पहुँचा था तब इन पर बहुत मार पड़ी थी।

रात के चार बजे अंधकार होने के कारण हम वहाँ बैठे रहें। जब प्रकाश हुआ तो हमने अन्दर घुसने का यत्न किया। जत्थे के दो डिक्टेटर हो गये थे। स्वामी धर्मानन्द जी, सहायक भगवान् देव जी। परन्तु जेलकार्यों से परिचित नहीं थे। इस लिए चौकी वालों ने जाने से निषेध कर दिया। इसी वाद-विवाद में १२ बज गये। ६५ सत्याग्रहियों की लाइन दूर तक थी। मैं भी पीछे था। जब क्षुधा और तृषा से तंग आ गये और खड़े-खड़े दुःखी हो गये तो भगवान् देव जी पीछे आए, मुझसे सलाह की। क्योंकि मैं उससे पहले दो बार जेल जा चुका था और जेल व्यवहारों से परिचित था। मैंने कहा कि तुम जेल में जाना चाहते हो। भगवान् देव ने उत्तर दिया कि हम तो जेल के लिए आये हैं। मैंने पूछा चौकी वाले कितने हैं। उसने उत्तर दिया कि दश हैं। तब मैंने कहा कि हम ६५ हैं, धक्के दे देकर घुस जाओ। तब ऐसा ही किया और

सारे घुस गये। उन्होंने टेलीफोन कर दिया। और २४ सिपाही और दो थानेदार आगये। और कहा--अब तुम गिरफ्तार हो गये हो अतः कोलाहल मत करो। और हमको लेकर चल दिये वहाँ से थाना तुलजापुर चार कोस था। दो-दो के जोड़े बना दिये और कुरास्ते से ले गये। दोनों तरफ सिपाही थे। जो पीछे रह जाता उसी को सिपाहो डंडे मारें, इसी तरह बहुत पीटे गये।

मेरे साथ टेका भक्त था जो ७५ वर्ष का था। वह थोड़ा पीछे रह गया तो उसके भी एक लाठी लगी। दो बजे थाने में पहुँचे। भूख प्यास से तंग थे। एक-एक रोटी मिली शाम को। एक नल थाने में था, गांव वाले भी इसी से पानी ले जाते थे। प्रातःकाल हमारा सब का नाम पता लिख लिया। और वहाँ से बिना भोजन मोटरों में भरकर नल दुर्ग पहुँचा दिए गए। वहाँ देरी में जाने के कारण वहाँ भी भोजन नहीं मिला। अगले दिन पेशी हुई, दिनभर अदालत में बैठे रहे। चार बजे सब को एक-एक वर्ष की कैद सुना दी। दो समय छूट जाने के बाद भोजन मिला। अगले रोज मोटरों में भरकर जेल उस्मानाबाद में भेज दिये। वहाँ पर छः दिन रहे। आप पीसते, आप ही रोटी बनाते। कुछ खाकसार थे। उन्होंने सत्याग्रहियों पर मार

पीट की। यह देखकर हमारे कुछ साथियों ने घबरा कर माफी माँग ली। जिनमें हमारा साथी मानसिंह भी था। जेल में अधिक सत्याग्रही होने के कारण हमारा औरंगाबाद में तवादला कर दिया सिद्धान्ती जी सहित। वहां कुछ दिन में काफी भीड़ हो गई, १००० सत्याग्रही हो गये। १००० का जत्था महाशय कृष्ण ले गये। वह एक सराय में ठहराये। खाना जेल वाले बनाते थे। जुआर की रोटी ५ दिन, दो दिन गेहूँ की १ तोला घी प्रत्येक को। उस घी में से बचाकर हवन भी करते थे। और आचार्य मुक्तिराम का उपदेश होता था और पृथ्वीसिंह जी के जेल में हर रोज नये भजन होते थे। सत्याग्रहियों में हिन्दू महासभा के भी थे। वे उत्पात करने लगे, कभी सब्जी फाड़ दी, बाग सारा उजाड़ दिया, और हम जिस बारिक में थे उसमें एक सभा हुई। उसमें "वृक्ष में जीव" के विषय में एक शास्त्रार्थ हो गया। इसमें दो पार्टी हो गई। एक का मुखिया सिद्धान्ती जी, जो जीव के पक्ष में थे व भगवान्देव व एक वकील भी थे, दूसरे पक्ष में मथुराप्रसाद, पृथ्वीसिंह और एक शास्त्री व एक वकील थे। मध्यस्थ आचार्य मुक्तिराम जी थे, दोनों तरफ से अपनी-अपनी युक्ति देते थे। यह शास्त्रार्थ ६ दिन तक

चला। मेरी युक्ति यह थी—साशन-अनशत°-दो प्रकार का जगत् है। एक चेतन एक जो कि भोजन आदि के लिए चेष्टा करता है। दूसरा अनशन जो जड़ भोजन के लिए ही बना है। क्योंकि उसमें ज्ञान ही नहीं है— "ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका" कहीं-कहीं जड़ के निमित्त से जड़ भी बन जाता है, और बिगड़ भी बन जाता है। जैसे परमेश्वर के रचित बीज पृथ्वी में गिरने और पानी बरसने से वृक्षाकार हो जाते हैं, परन्तु नियमपूर्वक इनका बनना या बिगाड़ना परमेश्वर वा जीव के आधीन है—सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास। "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वा द्वत्त्यनशनन्नन्यो अभिचकाशीति ॥

ऋ० मं० १ सू० १६४ मं० २० ॥

ब्रह्म और जीव चेतन आदि गुणों में दोनों सदृश होने के कारण सखा या मि ताभाव वाले सनातन अनादि हैं। और वैसा ही वृक्ष अनादि मूल रूप कारण है। वृक्ष पर बैठा हुआ एक सखा रूप पाप-पुण्य रूप फलों को भोगता है। और परमात्मा नहीं भोगता न खाता। इसलिये जीव फंस गया। यहाँ वृक्ष जड़ ही सिद्ध होता है। एक दिन ईशामसीह को जंगल में भूख लगी हुई थी तब एक गूलर के वृक्ष नीचे गये कि यह

विचार कर उसके फल लगे होंगे। परन्तु फल लगने का समय नहीं था। जब उसके फल नहीं मिले तब ईशा को क्रोध आया और शाप दिया कि गूलर! तू सूख जा। वह तुरन्त सूख गया। भला उस जड़ पदार्थ वृक्ष का क्या दोष था। उसके शाप से तो नहीं सूखा होगा, परन्तु कोई ज़हरीली औषधी डाल दी होगी जिससे गूलर सूख गया होगा। इससे भी वृक्ष जड़ सिद्ध होता है। "सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास त्रयोदश-महर्षि दयानन्द।" जिस दिन मध्यस्थ को निर्णय देना था उस दिन दैवयोग से वहां पर डण्डा चार्ज हो गया। और हम फिर इकट्ठे नहीं होने दिये। बहुत से सत्या-ग्रहियों के शिर फूटे व टांगें टूटीं। वह मारपीट करते हुए हमारे बारिक में पहुँचे। वहां पर आचार्य मुक्तिराम की युक्ति से हमारी मुक्ति हो गई और हम बारिक में बन्द कर दिये गये।

बारिक में इतनी भीड़ थी कि रात्रि में कोई लघु-शंका (पेशाब) करने उठे तब पैर मनुष्यों पर ही पड़ते थे। टट्टी व लघृशंका का एक ही स्थान था। जिससे दश सत्याग्रहियों को खड़ा ही रहना पड़ता था। और काफी शौच वहां इकट्ठा हो जाता था। एक दिन भक्त टेकराम हरिजन वहां गिर गया। तो मैं

उसको गोदी में उठा करके लाया और पूछ-पांछ कर अपने बिस्तरे पर लिटाया। सिद्धान्ती जी देखकर बड़े खुश हुए। पानी भी तोल कर दिया जाता था, जिसमें एक सत्याग्रही की बारी थी। एक रोज एक लुधियाना का सोलह साल का लड़का प्यास से रोने लगा। जेल का सिपाही रिपोर्ट करके आया, तब भी पानी नहीं मिला। दैवयोग से एक घण्टे के अन्दर ही बारिस हो गई। जंगलों में से पात्र रख कर पानी इकट्ठा करके पिया। इस प्रकार का कष्ट २० दिन तक दिया। सबके वस्त्रों में जूं पड़ गईं। २० दिन के बाद हम निजामाबाद शिवा दुर्ग में भेज दिये। वहां पर भी ८०० सत्याग्रही थे। महाशय पृथ्वीसिंह को बीड़ी का बड़ा व्यसन था। न मिलने से शरीर दुबला हो गया। उधर नवाब भी तंग आ रहा था। एक रोज आ० जी० आया। और वह पूछने लगा कि बाबा तुम कौन से जिले में रहते हो। मैंने कहा रोहतक जिला। उन्होंने कहा कि तुमने बड़े कष्ट उठाये। यहां तो कोई पाबन्दी नहीं है। और वह हमारी बारिक से बाहर निकला और उसको अवैतिनिक कैदियों ने बाहर निकलते ही घेर लिया और उससे प्रार्थना की हम बहुत दिनों से सरकार का कार्य करते आये हैं अतः हम को कुछ

रियायत मिलनी चाहिए। आई. जी. ने कहा कि हमें आर्यों से निबट लेने दो फिर तुम्हारी तरफ भी देखेंगे। यह आन्दोलन नौ मास तक चला। २८ सत्याग्रही इसमें भेंट चढ़े। इतना अत्याचार किया था जेलों में ही जिससे कि बहुतों का स्वास्थ्य बिगड़ गया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उस आन्दोलन के अध्यक्ष थे। उन्होंने सब जेलों में दौरा किया और मुकदमा भी किया। बाद में नवाब झुक गया, आर्यसमाज की सब शर्तें मान लीं। सब रिहा कर दिये। किराया व रास्ते का भोजन सब नवाब की ही तरफ से था। निजामाबाद से रोहतक तक का १८ रु० २ आने का टिकट था, जो आज से आधा किराया था। वहाँ से छूट कर मैं गुरुकुल झज्झर आ गया। गुरुकुल का कार्य भी शिथिल था। मैंने और सिद्धान्ती जी ने इस काम को संभाला। सिद्धान्ती जी किरठल रहते थे। दो मास में आकर संभाल जाते थे। १९३९ में भगवान् देव जी ने उस काम को संभाल लिया। मुझे वहाँ से अवकाश मिल गया। उधर कांग्रेस का सन् १९४० का आन्दोलन शुरू होने वाला था। नरेला गांधी आश्रम में भी श्री नायर जी, श्री ब्रह्मप्रकाश जी और भाई श्री ब्रजकिशन चान्दी वाले की देख-रेख में

रचनात्मक कार्य करने वाला एक कैम्प खोला गया। जिसमें मैं भी सम्मलित हो गया। रचनात्मक कार्य इस प्रकार था-कि नित्य उठकर ब्राह्ममूहूर्त्त में प्रार्थना करते, आचरण सम्बन्धी शिक्षा तथा स्वतन्त्रता के लिए उपदेश दिया जाता। उसके बाद सब चक्की चलाते जिसमें भाई ब्रज किशन चान्दी वाले भी थे, जो बड़े अमीर हैं। उन्हीं की तरफ से सारा व्यय होता था। भाई जी का आचरण बहुत ही अच्छा है बात ब्रह्म-चारी हैं। यह एक कांग्रेसो का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके बाद सब स्वयंसेवकों का शिक्षा दी जाती थी, जिसका संचालक ब्रह्म प्रकाश था। और महात्मा गान्धी जी जब देहली आते नब सारा भार भाई जी ही लेते थे। १९४० सन् में व्यक्तिगत आन्दोलन म० गान्धी जी ने शुरू किया। मैंने सत्याग्रह किया माजरे में, ब्रह्म प्रकाश के प्रबन्ध में। कुछ दिन के बाद में खुशीराम का नम्बर आया। तब गिरफतारी की तारीख आई, तो नहीं कर गये कि मेरी स्त्री कुवे में पड़ जाये। उसके स्थान पर टेका भक्त हरिजन जेल गया। यह था परीक्षा का समय। आज तो बहुत सारे कांग्रेसी खद्दर पहन कर आगे आये हैं और सरकार से लाभ उठा रहें हैं। देहली जेल से मेरा परिवर्तन

फिरोजपुर को कर दिया। वहां रात के ८ बजे हथकड़ी बेड़ी डण्डा लगाकर दो सिपाही ले चले। बेड़ियों से मेरे पैर फूट गये और खून से जूती भर गई। फव्वारे के पास सड़क पर मैं गिर गया। शहर वाले इकट्ठे हो गये। यह देखकर सिपाही घबराये और उन्होंने एक रिक्शा वाला पकड़ा और मुझको उसमें डालकर स्टेशनपर ले गये। जब मैं रेल में बैठा लिया, उस समय श्री ब्रह्मप्रकाश जी उपमन्त्री व जुगलकिशोर जी खन्ना प्रधान मन्त्री—कांग्रेस के ये दोनों व्यक्ति फल लेकर आये, देकर के मुझे मेरा हाल पूछ कर चले गयें। समाचारों में यह खबर भी निकाली कि सत्याग्रहियों के साथ बड़ा अत्याचार किया जाता है। आज वही ब्रह्मप्रकाश राज के मद में फूल कर हमसे बात नहीं करते। कुछ दिन के पश्चात् भगत टेका भी फिरोजपुर चला गया। सजा डेढ़ वर्ष की थी। टेका हरिजन रोगी हो गया और इसकी सेवा शुश्रूषा में मैं ही उपस्थित हुआ। खाने को अस्पताल की तरफ से अंगूर मिलते थे। जो आज वह टेका रोटी-रोटी के लिए मोहताज है। उससे पैरों से नहीं चला जाता था, टट्टी में मैं उठाकर ले जाता था। यह आर्यसमाजियों का ही काम था। पौराणिक कांग्रेसी इस

काम को घृणा की नजर से देखते थे। समझौता होने के कारण हम ११ मास में ही छोड़ दिए गये। जर्मन व अंग्रेजों की लड़ाई छिड़ गई। महात्मा गांधी ने भी आन्दोलन की तैयारी करी। सन् १९४२ अगस्त में बम्बई में कान्फ्रेंस हुई। वहाँ यह प्रस्ताव रक्खा कि अंग्रेजो! भारत छोड़ दो। कांग्रेसी कार्यकारिणी में यह पास हो गया। ९ अगस्त को कार्यकारिणी के सब नेता गिरफ्तार कर लिए गये। यह सूचना शीघ्र ही भारत में फैल गई। मैं भी फिर एक जत्थे में शामिल होकर पीलीकोठी को जला कर गिरपतार हो गया। गिरफ्तारी में २५ आदमी थे। पुलिस के आदमी ३००-४०० थे। जब हम घण्टाघर चान्दनी-चौक में गिरफ्तार किये तब पुलिस व मिलिट्री चारों तरफ थी, भीड़ के कारण पुलिस ने गोली चला दी। जिसमें हम देहात के छः-सात थे। जिनका नाम यह है—मथुराप्रसाद, टेका भक्त हरिजन माजरा, मोलड़ भक्त, प्यारे पहलवान, रामफल—ये विजवासन के हैं। हम जेल में अलग बन्द कर दिये। और रोजाना जेल अधिकारी किसी न किसी तरह के दुःख देते रहे। १२ दिन तक सूर्य के दर्शन नहीं हुए। इसके पश्चात् पेशी हुई। ६-६ मास की कैद हुई और हम मुलतान

की जेल में भेज दिए। मुलतान में भी जेलवालों व राजनीतिकों में झगड़ा चल रहा था। वहाँ भी जाकर कोठड़ी में वन्द कर दिये, वहाँ भी १२ दिन तक ऐसा ही हुआ। बाद में सजा काट कर छुटे। छूटकर घर आ गये। देहली से कुछ (बुलेटिन) विज्ञापन छपते थे सरकार के विरुद्ध। वह हम ग्रामों में बाँट रहे थे। गुप्तचरों के बतला देने पर हम पुनः पकड़े गये। देहली जेल में मेरी ६ मास की सजा हुई। और वहाँ से फिरोजपुर भेज दिया। अब की बार कोई कष्ट नहीं हुआ।

राजनीतिकों का खाना भी अच्छा होने लगा था। हर एक सत्याग्रही को एक चारपाई, एक गद्दा, एक रजाई और पूरे वस्त्र पहनने को मिलते थे। प्रत्येक सत्याग्रही को आठ बर्तन मिलते थे। खुराक में आध सेर दूध, १॥ छटाँक घी, तीन छटाँक चीनी। समय के अनुसार साग-दाल भी मिलने लगे थे। रोटी बनाने के भंडारे में इखलाकी रोटी वनाते थे और प्रबन्ध सत्याग्रहियों का था। १५ बादाम भी मिलते थे। आठवें दिन विशेष भोजन भी मिलता था, तो इस बार कोई कष्ट नहीं रहा। और जेल पूरी काटकर छूट गये। छूटकर घर आ गये। यहाँ पर काँग्रेस ने

आज्ञा दी कि जलियांवाला बाग का दिवस मनाया जाये। यह छोटी पूठ में तय हुआ। उसमें चर्खा दिवस रक्खा गया। तो वहाँ पर पाँच सत्याग्रही गये। एक मथुरा प्रसाद, प्रभुदयाल जो आज एम. एल. ए है। एक मास्टर खजान, एक भक्त मोलड़ बिजवासन, रामस्वरूप नांगलोई—ये पाँचो दिन के ९ बजे रामहेर के घर पहुँच गये। रामहेर वहां से गायब हो गया। गांव वालों ने थाना पहले से ही बुला रक्खा था। हम गिरफ्तार करवा दिये। नरेला थाने की हवालात में रोक दिये। मुकदमा बिल्कुल झूठा अवारागर्दी का चलाया। अगले दिन अदालत में पेश कर दिये।

गाँव के नम्बरदार ने यह बयान दिया कि ये पाँचों व्यक्ति रात के ९ बजे आये और दिलीप ने भी यही बयान दिया जो पूठ के हैं। हमने पूछा कि कहाँ जाते हो। तो ये कहने लगे कि पटवार घर को जलायेंगे। हमने पंचायत करके उस स्थान पर पहरा लगा दिया। फिर थानेदार ने बयान दिया कि मैं रात के चार बजे पूठ गया, यह आवारागर्द लोग गांव से वाहर कुछ बोल रहे थे। गाँव के नम्बरदार, चौकीदार बुलाये मैंने, और इनको पकड़वा दिया। हमने भी दो गवाह बोले थे—एक खुशीराम, एक रामानन्द

नम्बरदार माजरा, खुशीराम तो दरोगा के भय से इन्कार कर गया। रामानन्द नम्बरदार ने बयान दिया कि साहब ! ये आवारागर्द नहीं हैं, ये अच्छे घराने के हैं। और पूठ में इन्होंने चर्खा संघ रखा था दिन के ६ बजे। ये मथुरा प्रसाद व मोलड़ दोनों मेरे पास से ८ बजे माजरे से आये। थानेदार ने यह मामला झूठा बनाया है। हम रिहा कर दिये गये। थानेदार ने अन्दर तो कुछ नहीं कहा, परन्तु बाहर निकला तो नम्बरदार को बड़ा धमकाया। छूटकर घर आ गये। इसके पश्चात् सन् १६४४ में ब्रह्मप्रकाश कांग्रेस का जनरल सैक्रेटरी बना दिया। और उसने कुछ गांवों में भ्रमण किया। सरकार की तरफ से पाबन्दी थी कि कोई जलसा न करो, इससे जनता बहुत भयभीत थी। ब्रह्मप्रकाश जी माजरा डबास में आये। परन्तु किसी ने स्थान नहीं दिया जलसे के लिए। तो मैंने अपने मामा की बैठक में ठहराया। नम्बरदार रामानन्द ने कहा कि भाई और भी कांग्रेसी हैं। गांव मेरे ऊपर सरकार की कुदृष्टि होगी। परन्तु और स्थान न मिलने के कारण वहीं पर बैठक हुई। और उसमें दो कांग्रेसी कार्यकर्त्ता, एक मैं और एक हुशियारसिंह जी चुने गये। और कुछ कांग्रेस की तरफ से दवाइयों

का बर्ताव किया गया, जिसके बहाने मैं और हुशियार-सिंह जो गाँवों मे बांटते थे। और साथ-साथ कांग्रेस का काम भी करते। उसके लिए ब्रह्मप्रकाश ने हमको १५ रु० मासिक देने को कहा। मैंने कहा हम वेतन नहीं लेंगे। उन्होंने कहा कि वेतन मैं भी लेता हूँ, ये तुम्हारे भोजन के हैं, वे हमने स्वीकार कर लिए। रात में ब्रह्मप्रकाश वहीं ठहरे, सुबह चले गये, हमारी वह ड्योटी हो गई, यह दवाई बांटने का, सेवा करने का कार्य ६ मास तक चला। फिर यह बन्द हो गया। मैं और हुशियार सिंह दोनों दिल्ली गये,क्योंकि हमारा दो मास का वेतन रुका था। तो मैं और हुश्यार सिंह दोनों दफ्तर में गये। हुशियार सिंह ने कहा हमारा खर्चा दो, ब्रह्मप्रकाश ने कहा—अब तो नहीं है, फिर लेना। बाद में मैं तो गया नहीं, पता नहीं उसको मिला या नहीं। इसके बाद मैं व बिहारी व रामहेर टेका भक्त आदि एक जत्था बनाकर हरिद्वार गये। हरिद्वार ऋषिकेश लक्ष्मरग भूला और महाविद्यालय ज्वालापुर व कांगड़ी गुरुकुल में भी तिरङ्गा झण्डा लेकर गये। १९४६ सन में मेरठ में काँग्रेस की कान्फ्रेंस हुई। उसमें हम भ्रमरग करते हुये आये। १९४७ सन् में देश आजाद हो गया। और नकली कांग्रेसी वर्षा के मशकों की तरह उत्पन्न

हो गये और काँग्रेस में आने लगे। सन् १९५२ में माजरे से नरेला गान्धी आश्रम के लिए कुछ अन्न का चन्दा किया। और वह मानसिंह जो नवीन काँग्रेसी था, उसके यहाँ रख दिया। ५ मास बीत गये परन्तु वह अन्न नहीं पहुँचाया। आश्रम से मेरे नाम चिट्ठी आई कि अन्न पहुँचा दो। श्री हुश्यारसिंह के पास से आई थी वह चिट्ठी। मैंने एक तांगा किराये पर तैयार करके डा० श्रीचन्द को लेकर उसके घर पर गये। मानसिंह की पत्नी ने कहा कि यहाँ किसी का अन्न नहीं है। मैंने यह रिपोर्ट नरेला कांग्रेस के प्रधान हीरासिंह से कर दी कि हमें अन्न नहीं मिला। उसने फिर मानसिंह को बुलाकर धमकी दी। दूसरे दिन मुझे बुलाकर वह अन्न दे दिया। मैं उसको आश्रम में पहुँचा आया। आज उसी मानसिंह को नायर जी ने प्रमाण-पत्र दिया कि यह बहुत अच्छा कांग्रेसी कार्यकर्त्ता है। १९५२ सन् में कांग्रेस के प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ था। उस सपय बुवाना हलके में ५ उम्मीदवार थे। जिनके नाम ये हैं—श्रीकृष्ण नायर, चौ० कंवल-सिंह जी, पं० गंगासहाय बोहरा, चौ० बिहारीसिंह जी, वैद्य खुशीराम। नायर ने दो जगह मुकाबला किया था, एक अलीपुर में कवलसिंह था। यहाँ पर काँग्रेस

की दो पार्टियों हो गईं। और उन्होंने गांवों में भी दो पार्टी बनाकर वैमनस्य कर दिया। नायर जी की सलाह से यह विचार हुआ कि मैं कंवलसिंह को हरा दूंगा और बुवाना से खुशीराम को जिताओ, क्योंकि वह हमारी पार्टी का आदमी है। और इन तीनों को हराओ। ये हलके में संगठन कर दिया। जब उनको यह पता लगा कि मथुराप्रसाद व बिहारी कंवलसिंह का साथ देंगे तो वैद्य खुशीराम व चौ० मांगेराम दोनों ने मिलकर मथुराप्रसाद की जो कांग्रेस सदस्य की प्रतिलिपि व कर्मठ सदस्य की प्रतिलिपि थीं, दोनों गुम कर दीं। और एक प्रतिलिपि रामानन्द व जैदयाल साध, हवलदार हुकमचन्द, श्रीलाल जागेराम आदि की १० सदस्यों की कापी गुम कर ली। मेरा उनसे द्वेष या मनमुटाव हो गया। चौ० हीरासिंह जी कार लेकर माजरे में आया और डाक्टर श्रीचन्द की बैठक में ठहरा। मेरे को बुलाया। चौधरी जी ने कहा कि राय खुशीराम की देना। मैंने कहा कि मेरी राय गुम कर ली है। मेरा नाम ही राय में नहीं आया। इन्होंने गुम कर लिया, इसीलिए मैं औरों से दिलाने की भी कोशिश नहीं करूँगा।

उस समय माजरे में चकबन्दी हो रही थी। मानसिंह ने कहा चौधरी हीरासिंह से—कि हमारे

जमीन अच्छी नहीं लग रही। तो चौधरी हीरासिंह ने कहा कि तुम खुशीराम की राय दोगे ? खुशीराम की दोगे तो जैसी चाहोगे वैसी ही जमीन लगवा लेना। और वह चकबन्दी हीरासिंह ने रद्द करवा दी, जिससे आज गांव में दो पार्टी बन गईं और आज तक चकबन्दी पास नहीं हो सकी। खुशीराम व नायर चुने गये और बुवाने से चकबन्दी का मालिक मांगेराम बन गया अब उनको ओर भी धाक बैठ गई। चकबन्दी में बड़ी लूट खसौट होने लगी। १९५३ में ३१ जनवरी को चौ० बिहारीसिंह ने जल्सा रक्खा माजरे मे चकबन्दी के भ्रष्टाचार के विरुद्ध, दो तारीख का नाँगल ठाकरान में रखा और १० का कुतुबगढ़ माजरे में। मालमन्त्री अमन जी, कृष्ण नायर जी और मांगेराम, खुशीराम ये चार आये। इनके लिए चोपाल में सब प्रबन्ध किया गया। ५, ६, गांवों के आदमी आए थे अपनी-अपनी शिकायत लेकर। नायर जी ने कहा कि कोई अच्छा स्वागत नहीं किया। चौधरी बिहारीसिंह कुछ शिकायत करने को उठा तो उसको रोक दिया। फिर मैं उठा, मेरे को भी बैठा दिया और कहा कि कोई भ्रष्टाचार नहीं है और किसी की शिकायत नहीं सुनी। ये कृष्ण नायर जी देश स्वतन्त्र होने के पहले माजरे में आए थे जल्से में। थानेदार ने इस

पर मुकदमा चलाया और माजरे में दो नम्बरदार गवाह बनाये, रामानन्द व शीशराम जब थानेदार उनको गवाह बना रहा था तब हमने पंचायत की और कहा कि यह देश भक्त है इसके लिए तुम झूठे गवाह मत बनाओ। नम्बरदार गवाही से इनकार कर गये परन्तु दरोगा की धमकी सहनी पड़ी। उस समय में नायर जी छूट गए। फिर एक बार इसको पुलिस दबा रही थी तब वह माजरे रात को आया। जैदयाल साध ने इस को अपने घर में छुपाया। अब यह इन लोगों पर कोई दृष्टि भी नहीं डालता परन्तु गद्दार कहता है। यह नायर त्रावणकोर-कोचीन का है वहां पर दो जाति हैं ? एक नैयर एक ऐय्यर। नैयरों को नीच मानते हैं। हम लोगों नें इसका बहुत बार स्वागत किया बड़े प्रेम से, परन्तु वह इतने कृतघ्न निकले कि अब हमसे व छाजूराम से बात नहीं करते। और नवीन कांग्रेसियों की प्रतिष्ठा करते हैं। चौ० बिहारी ने १० फरवरी को कुतुबगढ़ में भ्रष्टाचार के विरुद्ध सत्याग्रह शुरू किया। एक मास यह चला परन्तु नायर ने फिर भी कहा कि उनको मरने दो। कुतुबगढ़ वालों ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक रिपोर्ट मांगेराम को दी और तहसीलदार आदि को बुलाकर मांगेराम ने

उसको छिपा लिया। वह भी घूस में शामिल हो गया।

१९५० सन् में श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी का स्वर्गवास नरेला गांधी आश्रम में हुआ। वहां पर कांग्रेसियों की एक शोक सभा नायर जी की प्रधानता में हुई। नायर जी ने एक प्रस्ताव रखा कि स्वामी जी की यादगार होनी चाहिए और यह पास किया कि हर एक कांग्रेसी खद्दर उद्योग का सदस्य बने और एक आदमी १० रुपये या अधिक के बौंड खरीदे जिस से जनता को भी लाभ हो और स्वामी जी का नाम भी चलता रहे।

नायर जी ने ५ बौंड बोले, मथुराप्रसाद ने दो बोले और वहीं २० रुपये दे दिए। इसी तरह बहुतों ने खरीदे। परन्तु दो वर्ष तक नायर जो ने नहीं दिये, औरों की तो बात दूर रही। मैंने चार साल के बाद वह रुपये वापिस लिए, क्योंकि उन्होंने कोई कार्य नहीं चलाया। मेरी अश्रद्धा हो गई। १९५३ में भारत सेवक समाज के नाम से कुछ अन्न का चन्दा किया गया तहसीलदार बदलूराम को सहायता से। लोगों ने चकबन्दी के भय से बहुत-बहुत अन्न दिया। गरीबों से जोरदारी से लिया गया। कोई कहता है

कि १००० मन हुआ कोई १२०० मन । हिसाब न देने के कारण सही पता न चला बुवाना एक मीटिंग की कांग्रेसियों ने जिस में नायर जी भी उपस्थित थे। कांग्रेस के मण्डल के सदस्य चौ० रामहेर ने पूछा कि लोगों में अफवाह है कि उस अन्न को बेचकर नायर जी ने कार खरीद ली। नायर को क्रोध आ गया और कहा कि मेरे से अलग पूछनी थी यह बात। परन्तु फिर भी हिसाब किसी को नहीं सुनाया। इसलिए शंका के कारण मथुराप्रसाद व विहारी इसका निरीक्षण करने को भाई व्रजकिशन चांदी वाला के पास गये। उससे पूछा कि भाई जी भारत समाज सेवक के नाम देहात से कितना अन्न आया है। उन्होंने उत्तर दिया कि एक दाना भी नहीं आया। नई दिल्ली के समाज सेवक के दफ्तर में गये जिस की प्रधान इन्दरा गांधी हैं। वहाँ से भी यही उत्तर मिला। हम को निश्चय हो गया कि गाँवों में लोगों की धारणा सही है। इसके बाद १९५४ में मैंने एक पत्र पंजाब सरकार चंडीगढ़ के नाम भेजा। क्योंकि पंजाब सरकार सत्याग्रहियों के जुर्माने वापिस दे रही है। मेरे ऊपर भी १९३२ में देहली में जुर्माना हुआ था। और वह वसूल किया गया था ग्राम रोहद जिला रोहतक से। इस लिए मैंने भी लिखा

कि मेरा भी जुर्माना वापिस मिलना चाहिए। वहाँ से अंग्रेजी में एक फार्म आया जिस में आठ-नौ खाने थे। जिस में लिखा था कि तुम्हारी कौन से सन् में कैद हुई। और कितनी आयु, नाम क्या है क्या काम करते हो, कहां रहते हो ? और नीचे के खाने में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के हस्ताक्षर करवायें। वह पत्र लेकर मैं दिल्ली चौधरी ब्रह्मप्रकाश के पास गया। यह सोचा कि यह मुझे भी जानता है। वह सरकार भी इसको जानती है। वहां मैंने सेक्रेटरी से कहा कि मुझे चौधरी ब्रह्मप्रकाश से मिला दो। उसने उनसे पूछकर सूचना दी कि अभी रिवाड़ी से एक राव जी आये हैं फिर मिलना। इसी तरह बैठे-बैठे घण्टे होगये। मैंने प्राईवेट सेक्रेटरी से कहा कि मेरा दो मिण्ट का काम है, मैंने वह पत्र दिया। सन्तराम ने कहा कि यह तो मैं ही कर दूंगा और सारा काम कर दिया और कहा कि दस्तखत चौधरी से करवा लो। मुझे तीन घण्टे हो गए थे। मैंने फिर पुछवाया। फिर ठहरने का उत्तर मिला। मैंने कहा कि मैं ही जाता हूँ, यह तो थोड़ी देर का काम है। मैंने चिक उठाई घुसने के लिए तो सन्तराम जी बोले, ठहरो अभी। मैंने कहा कि अब ठहरने का समय नहीं है, अतः तू ही जाकर दस्तखत करवा ला। वह फार्म लेकर अन्दर गया। चौधरी

जी ने फार्म को पढ़ा और पढ़कर इनकार कर गये कि मैं हस्ताक्षर नहीं कर सकता। मैंने कहा कि हमारा इतना भी उपकार नहीं कर सकते तो और क्या करोगे। और मेरी अश्रद्धा हो गई। क्योंकि इन्होंने तो कुछ दिया ही नही। दूसरों से मिल रहा था वह भी नही दिलाया।

टका धर्मः टका कर्म टका हि परमं पदम्।

किसी कवि का यह वचन सत्य है—

लोभात्क्रोधः प्रभवति क्रोधाद् द्रोहः प्रवर्तते।
द्रोहेण नरकं याति शास्त्रज्ञोऽपि विचक्षणः॥

सन् १९२९ में लाहौर कांग्रेस का सालाना अधिवेशन हुआ। उसमें २००० प्रतिनिधियों के बैठने का पण्डाल रचा गया था। उसके प्रबन्ध में १५०० कांग्रेसी स्वयं सेवक गये थे जिस में ६० जिला रोहतक से गये थे जिन में मथुराप्रसाद भी सम्मिलित था। पं० श्रीराम शर्मा तथा चौ० सलवन्तसिंह मोखरा की अध्यक्षता में वहाँ पहुँचे। यह अधिवेशन रावी के किनारे किया गया और २० दिन तक इसके प्रबन्ध के लिए हम वहाँ ठहरे। उस समय का रेल किराया रोहतक से लाहौर तक वापसी किराया ६।) रु० था। प्रातः ३ घण्टे नित्य परेड करते थे। और रात

को ३ घण्टे प्रत्येक स्वयं सेवक नेताओं के शिविरों के आगे पहरा देता था। मेरी ड्यूटी महात्मा गान्धी तथा श्री जवाहरलाल जी के शिविरों के आगे आती थी। इस अधिवेशन का प्रधान पद श्री जवाहरलाल ने अलङ्कृत किया। उस समय लाहौर की जेलमें भगतसिंहजी देहली में असेम्बली भवन में बम्ब मारने के अपराध में गिरफ्तार थे। स्वर्गीय पं० मोतीलाल ने यह प्रस्ताव किया स० भवतसिंह जी को छुड़वाया जावे परंतु वायसराय ने यह उत्तर दिया कि आप का आन्दोलन अहिंसावादी है और यह हिंसावादी है इसको नहीं छोड़ सकते। इस अधिवेशन से पूर्व अधिवेशनों में नौकरी आदि आर्थिक अवस्थाओं के सुधारने की माँग की जाती थी। इस पंडाल में जो प्रवेश करता तो कम से कम १० रु० और अधिक २०० तक देने पड़ते थे। परंतु इन १५०० सौ राजनीतिकों का कोई प्रवेश शुल्क नहीं था। फिर यह प्रस्ताव रक्खा गया कि भारत पूर्ण स्वतन्त्रता के सिवाय और कुछ भी न मांगेगा। इसी के लिए यत्न किया जायेगा। इस से पूर्व राष्ट्र का कोई राष्ट्रीय झण्डा नहीं था। और अधिवेशन में "तिरंगा झण्डा" राष्ट्रीय झण्डा निश्चित किया गया। रात के १२ बजे यह तिरंगा झण्डा बहुत ऊँचे फहराया

गया। इसमें पेशावर के पहलवानों का नाच भी आया हुआ था। जब झण्डा अभिवादन हो चुका तो वे झण्डे के चारों तरफ दो-दो हाथ कूदते हुए जवाहरलाल के साथ झण्डे के गाने गा रहे थे। १९३० में रोहतक की मंडी में काँग्रेस का उत्सव हुआ। मेरा भी पं० श्रीराम जी ने प्रोग्राम दिया था। मैं इस विषय में बोला था। "बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।" सारंगधर अध्याय ४ श्लोक २१।

जो बुद्धि का नाश करमे वाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी भी न करो। औरजितने सड़े खराब दूषित अच्छी प्रकार न बने हुए और मांसाहारी मलेच्छ जिनका शरीर मद्यमांस के परमाणुओं से ही पूरित है उनके हाथ का अन्न न खायें। जिसमें उपकार हो, प्राणियों की हिंसा न हो—अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से ४ लाख ७५ हजार ६ सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है। वैसे पशुओं को न मारें न मारने दें। जैसे किसी गाय से २० सेर किसी से २ सेर दूध प्रति-दिन होवे उनका मध्य भाग ११ सेर प्रत्येक गाय से होता है। कोई गाय १८ महीने कोई ६ महीने तक दूध देती है उसके मध्य भाग १२ महीने हुये। और प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से

दो लाख ४६ हजार ६० मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके ६ बछिया ६ बछड़े होवें उनमें से दो मर जायें तो भी दस रह जायें। उनमें से ५ बछियों के जन्म भर के दूध को मिलाकर १ लाख २४ हजार मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे ५ बैल वह जन्म भर में ५ हजार मन न्यून से न्यून उत्पन्न करें। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य ३ पाव खाये तो २॥ लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न मिलाकर तीन लाख ७४ सहस्र ८०० मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। दोनों संख्या मिला कर एक गाय की एक पीढ़ी में ४ लाख ७५ हजार ६०० मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं और पीढी पर पीढी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है इससे भिन्न बैल गाड़ी सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं। तथा गाय दूध में अधिक उपकारक होती है। और जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंसे भी हैं। परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद्धि बृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्य उपकार आर्यों में गाय को गिना है। और जो कोई अन्य विद्वान् होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा। बकरी के दूध से २५ सहस्र ६२०

आदमियों का पालन होता है। वैसे हाथी, घोड़े, ऊँट, भेड़ आदि से बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वाले को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा। देखो जब आर्यों का राज्य था तब यह महोपकारक गायादि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी रहते थे। क्योंकि दूध घी बैल आदि पशुओं की बहुतायत होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकर गवादि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं। तभी से आर्यों के दुख की बढ़ती होती जाती है। हो भी क्यों न। "नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्"। वृद्धचाणक्य—अध्याय १० श्लोक १३। जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाये तब फल फूल कहाँ से आयें। यह मेरा व्याख्यान समाप्त हुआ तो बाद में पं० श्रीराम ने कहा कि मथुराप्रसाद! तुम यह धर्मादि के विषय में किसी गायादि का पक्ष लेकर मत बोला करो। यह तो जब हमारा राज्य हो जायेगा तब हम एक दिन में गोवध बन्द कर देंगे। परन्तु आजतक गोवध बन्द नहीं हुआ। पं० जवाहरलाल जी जब चीन से आये तब कलकत्ता नें कहा कि कांग्रेसियो! गो-भक्तों के आगे

अड़े रहो। भारत में पशु धन की उपेक्षा की जा रही है। सन् १९४८-४९ में देश से बछड़ों का चमड़ा ३० लाख ८१ हजार रुपये का भेजा गया। १९५२-५३ में ८० लाख का भेजा गया। २० करोड़ पशुओं पर सरकार का व्यवहार अत्याचारपूर्ण कहा जा सकता है। इसी तरह हड्डी का चौगुणा निर्यात किया गया है, जब तक इस देश का पशु धन नहीं बचाया जायेगा। तब तक कृषकों का भला नहीं हो सकता। क्योंकि एक-एक बैल हजार-हजार में आने लगा है। जब कि इतनी बचत सारी फसल में नहीं हो सकती। महर्षि दयानन्दजी ने सं० १९७७ वि० में कहा था कि आज से २५ वर्ष पूर्व ५ रु० में बैल आता था। जो आजकल २५ रु० में मिलने लगा है। इसी तरह गौओं का ह्रास होता रहा तो किसानों को पेट भरना मुश्किल हो जायेगा। दूध की बात तो दूर ही रही। ऋषि आगम—मेधावी होते हैं। जो चेतावनी दी, सो आज हो रहा है। श्री नेहरू जी ने अपने एक भाषण में कहा कि मैं दूध विदेश में ही पीता हूँ। यहाँ नहीं पीता। तारीख २५ जुलाई सन् १९५४—हिन्दुस्तान। पीने को मिले ही कहाँ? यहाँ दूध है ही नहीं। "घृतं न श्रूयते कर्णे दधि स्वप्नेऽपि न दृश्यते। दुग्धस्य तर्हि का वार्त्ता तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।" घी तो सुनने

को सुनाई नहीं देगा। दही के सुपने भी नहीं आयेंगे। दूध की तो बात ही क्या छाछ इन्द्र तक को मिलनी मुश्किल हो जायेगी। अगर ऐसे ही पशुओं का गला काटता रहा तो। ये बातें प्रत्यक्ष सिद्ध होंगी। देहली में नित्य १२०० सौ भेड़-बकरी, ५० भैंसे और ७ सुअर सरकारी आज्ञा से कटने रजिस्टर्ड हैं।

केवल पतंग विहंगों में जलचरों में नाव ही।
बस भोजनार्थ बच रहे चतुष्पदों में चारपाई॥

यही हालत प्रतीत होती है। जवाहरलाल की ६५ वीं वर्ष गांठ पर चीन से भेंट आई थी उसमें कुछ ऐसे ही मुर्गे आदि आये थे। हिन्द-स्वराज्य पृष्ठ १९२ में गान्धी लिखते हैं कि मैं गौ को स्वयं पूजता हूँ। हमारा कृषि प्रधान देश है। गाय के बिना हिन्दुस्तान का निर्वाह ही नहीं हो सकता। मैं अंग्रेजों से प्रार्थना करता हूँ कि गाय मारना छोड़ दो। इससे हिन्दुओं का दिल दुखता है। यह न समझो कि हम धर्माधर्म, हानि-लाभ को नहीं समझते। अब तक किसी कारण से हम नहीं बोल सके। अब तुम्हारी यह धांधली नहीं चलेगी। परन्तु देहली प्रदेश राज्य सभा में एक जनसंघी ने प्रस्ताव रक्खा कि गो-हत्या कानूनन बन्द की जाये। माल मन्त्री श्री अमन

साहब ने इसका उत्तर दिया कि गोहत्या बन्द नहीं कर सकते। क्योंकि यहां पर गो-भक्षक भी रहते हैं। और प्रस्ताव रद्द कर दिया। दूसरी बात अंग्रेजी की है। महात्मा गान्धी आत्म-कथा में लिखते हैं कि अंग्रेज चाहे रह जायें पर अंग्रेजी न रहे। अंग्रेजी शिक्षा भारत में १८५८ में चालू की गई। तब भारत सरकार के गृहमन्त्री अंग्रेज ने मलका महारानी को तार दिया—कि हमारी शिक्षा भारत में चालू हो गयी। अब हमको निश्चय हो गया कि हमारी जड़ जम गई। इसी लिए महात्मा गांधी ने कहा कि अंग्रेजी गुलामी की निशानी है। श्री जवाहरलाल ने कहा कि अंग्रेजी चाहे रह जाये परन्तु अंग्रेज चले जायें। सो वही हुआ। अंग्रेज चले गये, अंग्रेजी रह गई। आज भी इससे दफ्तरों में खूब काम लिया जाता है।

२६ नवम्बर १६४५ सन् में लालकिले में देशभक्त आजादहिन्द के तीन कप्तान अंग्रेजी सरकार के कर्मचारियों ने दुर्व्यवहार के कारण मार डाले। जिनका नाम यह हैं—सरदार अजमेर सिंह, सरदार जीवनसिंह, सरदार मग्घर सिंह, चौथा आजाद हिन्द फौज़ का ब्रिगेडियर अहसान कादिर जो कि अब्दुल कादिर के पुत्र थे। जो मार के कारण पागल हो गये

थे। आज काँग्रेसी उन देश-भक्तों का नाम भी लेना पसन्द नहीं करते। इसी तरह मांडोठी अड्डे पर गोली चली। काफी मारे गये। जिनके प्रयत्न से देश स्वतन्त्र हुआ है। उन वीरों का आज कोई नाम भी नहीं लेता। इसी तरह वर्ण व्यवस्था के संबंध में श्री जगजीवनराम श्रममन्त्री ने बंगलोर में २० अक्तूबर १९५४ को हरिजनसंघ सम्मेलन में उद्घाटन करते हुए कहा वर्ण व्यवस्था जब तक समाप्त नहीं होगी तब तक छुआ-छूत नहीं हटेगी। यह वर्ण व्यवस्था पर कुठाराघात है। बहुत कुछ बात समझ में न आने के कारण उलटा प्रचार कर देते हैं। जिससे आम लोग सदियों तक दुःख उठाते हैं। रावण के समय से यह दो मत चले आ रहे हैं। एक मांसाहारी, दूसरा शाकाहारी। मत्स्य पुराण में अध्याय १४३, वायु पुराण तथा महाभारत शान्ति पर्व ३३६ में लिखा है—कि देव और असुरों में अज शब्द पर मतभेद हो गया। देव कहते थे कि अज शब्द का अर्थ धान है और असुर कहते थे बकरा है जो यज्ञ और भक्षण में विधान है। दोनों ही पक्ष के पंचों ने राजा वसु मध्यस्थ बना दिया। जैसे आज श्री जवाहरलाल को कर दें। राजा ऊपर से फलाहारी दीखता था। परन्तु मांसाहारियों के साथ रुचि हो गई

थी। जब दोनों पक्ष निर्णय के लिए गये। राजा वसु ने कहा—कः कस्य मतः पक्षो ब्रूत सत्यं द्विजोत्तम। महाभारत शान्ति पर्व ३३,१२। यह सुनकर देवों ने कहा कि हमारा पक्ष धान है। राजा वसु ने ऋषियों का उत्तर सुन अज शब्द का अर्थ असुरों के पक्ष में बकरा कर दिया। बस उसी दिन से मांसाहारी दल बढ़ता जाता है। और भारतवासी अपनी सभ्यता व धर्म को गँवा रहे हैं। महात्मा गांधी ने हिन्द-स्वराज्य में लिखा है कि मुझे धर्म प्यारा है। और हमारी सभ्यता सब देशों से ऊँची है। दुःख है कि नारा गान्धी का लगाते हैं परन्तु उपदेश ग्रहण नहीं करते। एक शब्द के दो अर्थ होने के कारण भी भूल हुई है। ऋग्वेद में दूध की आहुतियां, यजुर्वेद में घृत की, सामवेद में सोम की, अथर्ववेद में मधु की देनी बतलाई हैं। इसके पश्चात् ब्राह्मणादि इतिहासों में मेद की आहुति देनी बतलाई हैं। पुराण कल्प गाथा नाराशंसी आदि ग्रन्थों में मांस-चर्बी की आहुति देनी बतलाई हैं। अतः यह ग्रन्थ सर्वांश में वेदानुकूल नहीं हैं। वेद में गौ और अश्व शब्द सूर्य की किरण के अर्थ में हैं। दो अर्थ जिस शब्द के हों वहाँ मनुष्य व्याकरण का ज्ञान न होने के कारण भूल करता है। उसका सही अर्थ

ऋषि ही निकालते हैं। मद्य मांस का प्रचार लोभी, लालची, धूर्त्तों ने किया है। क्योंकि यह अभक्ष्य हैं। अक्ष शब्द के आठ अर्थ हैं—संचर नमक, बहेड़ा, कर्ष, तोल, द्याक्ष, रुद्राक्ष, छकड़ा, इन्द्रिय, पांसे, काक। काक शब्द के भो आठ अर्थ हैं—मकोय, काकोली, लाल, घुघची, काक जंघा, काकसा, कटुमर, काक-पक्षी। नाग के भी आठ अर्थ हैं—सांप, हाथी, मेंढा, शीशा, नागकेशर, नागर बेल, पान, नागदन्ती। रस शब्द के ९ नाम हैं—मांस, द्रव, ईख का रस, मधुर-दीर्घरस पारद, बालका का एक रोग, विष, जल और काव्य के भी ९ रस हैं।

निरुक्त में लिखा है—"चर्म च श्लेष्मा च स्नायु च ज्या गौरुच्यते।" अर्थात् चमड़मा, श्लेष्मा नसें और धनुष की डोरी को गौ कहते हैं। जिह्वा, वाणी, इन्द्रिय, पृथ्वी को गौ और किरण को भी गौ कहते हैं। यहां पर चतुष्पाद गाय का ही ग्रहण करना नितान्त भूल है। जितने संस्कृत में बैल-गाय के नाम आये हैं उतने राज निघण्टु भाव प्रकाश में औषधियों में आये हैं। काकड़ा सिंगी को औषधी में काटना, पकाना, खाना होता है। वहां गौ-वृषभ समझकर काटने लगे तो मूर्खता होगी। वाग्भट्ट में अनेक प्राणियों के नाम

धान के आय हैं । यहां जन्तु मुख, कुक्कुटाण्ड, कपाल, पारावत, सूकर, दर्दर अनेक प्रकार के चावलों का नाम आया है । भाव प्रकाश में अजमोदा खरासवाच, मयूरी, दीप । यहां अश्वखर मयूरी के नाम अजमोदा के बतलाये हैं । सुश्रुत में अजा महौषधी बतलाई है । केवल दो अर्थ होने के कारण असुरों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने को उलटा अर्थ निकाला है । सुश्रुत में कच्चे आम का समाचार है उसमें नस-नाड़ी, चर्बी मज्जा अस्थि नहीं प्रतीत होती । भाव प्रकाश में लिख दिया कि आम पकने पर नस-नाड़ी सब दिखलाई देती हैं । "प्रस्थं कुमारिका मांसम् एक सेर कुमारी का मांस यहाँ घी कुवार के गुद्दे को मांस कहा है । हठप्रदीपिका योग में लिखा है कि—

गोमांसं भक्षयेन्नित्यं पिबेदमरवारुणीम् ।
कुलीनं तमहं मन्ये इतरे कुलघातकाः ॥

अर्थात् जो नित्य मांस को खाता है, मदिरा पीता है वही कुलीन है । सुनने में कितना भयानक है परन्तु लेखक ने दूसरे ही श्लोक में अर्थ कर दिया नहीं तो अनर्थ हो जाता ।

गोशब्देनोदिता जिह्वा तत्प्रवेशोदितालुनि ।
गोमांसभक्षणं तत्तु महापातकनाशनम् ॥

अर्थात् योगी पुरुष जिह्वा को लौटा कर तालु में प्रवेश करता है। उसी को भक्षण कहा गया है। गोजिह्वा को कहते ही हैं। जिह्वा मांस की होती है। यदि दूसरे श्लोक में यह बात स्पष्ट न कर दी जाती तो गौ मांस की विधि-विधान भक्षण वा खाने की रस्म सबमें प्रचलित हो जाती। क्योंकि योगियों का प्रमाण हो जाता। साधारण लोग उलटी चाल शीघ्र ही पकड़ लेते हैं।

एनी र्धाना हरिणी श्येनी रस्या कृष्णा धाना रोहिणी धेनुरुच्यते तिलवत्सा ऊर्जवस्मैः ॥ अथर्व १८-३४-४। हरिणी श्येनी रस्या कृष्णा रोहिणी आदि धान ही धेनु है। इनके तिलरूपी बछड़े हमें बल दें।

हाय बुरी गरीब की हर से सही न जाय।
जैसे मुर्दा खाल से लोह भस्म हो जाय।

सन् १९५४ दिसम्बर २९ को देहली राज्य प्रदेश कांग्रेस प्रतिनिधियों का चुनाव हो रहा था जिसमें मुकाबला श्री कृष्णा नायरजी का श्रीमती सुभद्रा जोशी से था। चौ० छाजूराम पुराने सत्याग्रही कुछ सहायता के लिए कांग्रेस दफ्तर में गये, २० दिसम्बर को कृष्णनायर जी ने कहा—कि दफ्तर से बाहर जाओ, चौ० छाजूराम ने उत्तर दिया कि तुम बाहर हो जाओ, और दैवयोग से कृष्ण नायर जी हार गये। और दफ्तर से बाहर हो गये। भक्त छाजूराम का वचन पूरा हुआ।

बाहर जाओ, चौ० छाजूराम ने ... बाहर हो जाओ, और दैवयोग से कृष्ण नायर जी हार गये। और दफ्तर से बाहर हो गये। भक्त छाजूराम का वचन पूरा हुआ।